 ISSN-2583-2581

शोध शीर्षक: भारतीय ओटीटी प्लेटफॉर्म पर क्षेत्रीय हिंदी भाषा और बोलियों के उपयोग

***सचिन गोस्वामी**
****प्रो. नरेंद्र कुमार मिश्रा**
*****डॉ. विवेक सिंह**

सारांश:

भारतीय ओवर-द-टॉप (ओटीटी) स्ट्रीमिंग उद्योग ने पिछले एक दशक में डिजिटल पैठ, किफायती डेटा और विविध दर्शक आधार के कारण गहरा परिवर्तन किया है। इस विकास को आकार देने वाली एक प्रमुख प्रवृत्ति ओटीटी प्लेटफॉर्म पर क्षेत्रीय भाषाओं और बोलियों-जिनमें हिंदी के क्षेत्रीय रूप भी शामिल हैं- की बढ़ती प्रमुखता है। यह शोधपत्र इस बदलाव को प्रेरित करने वाले कारकों की पड़ताल करता है, प्रमुख और विशिष्ट ओटीटी प्लेटफॉर्म पर क्षेत्रीय हिंदी सामग्री और बोलियों के परिदृश्य का विश्लेषण करता है, और इस प्रवृत्ति के सांस्कृतिक, आर्थिक और रचनात्मक निहितार्थों का आकलन करता है। अध्ययन भारतीय ओटीटी सामग्री में क्षेत्रीय हिंदी भाषा और बोलियों के उपयोग का व्यापक अवलोकन प्रदान करने के लिए उद्योग रिपोर्ट, प्लेटफॉर्म केस स्टडी और विशेषज्ञ टिप्पणियों पर आधारित है।

कुंजीशब्द- ओटीटी, सिनेमा, हिन्दी भाषा, हिन्दी सिनेमा**,** वेब सीरीज।

1. परिचय

भारत की भाषाई विविधता अद्वितीय है, भारत भाषाई विविधता का एक उल्लेखनीय ताना-बाना प्रस्तुत करता है, जहाँ हिंदी, अंग्रेज़ी के साथ-साथ आधिकारिक भाषा के रूप में कार्य

* **शोधार्थी, स्कूल ऑफ मीडिया, फिल्म एंड टेलीविजन स्टडीज, आईआईएमटी विश्वविद्यालय, मेरठ**
** प्रोफेसर, **स्कूल ऑफ मीडिया, फिल्म एंड टेलीविजन स्टडीज आईआईएमटी विश्वविद्यालय, मेरठ**
*** एसोसिएट प्रोफेसर, **शहीद भगत सिंह गर्ल्स पी जी कॉलेज**, सरधना, मेरठ

करती है। देश भर में 121 भाषाएँ और 19,500 से अधिक बोलियाँ बोली जाती हैं।हिंदी, व्यापक रूप से परिभाषित, 422 मिलियन से अधिक व्यक्तियों द्वारा बोली जाती है, एक ऐसा आँकड़ा जो इसकी बोलियों और भाषण विविधताओं की एक विस्तृत श्रृंखला को समाहित करता है। यह व्यापक भाषाई परिदृश्य भारत की समृद्ध सांस्कृतिक पहचान के लिए एक महत्वपूर्ण आधार बनाता है। "हिंदी बेल्ट", जिसे "हिंदी हार्टलैंड" के रूप में भी जाना जाता है, उत्तरी, मध्य, पूर्वी और पश्चिमी भारत में फैला एक महत्वपूर्ण भाषाई क्षेत्र है। इस क्षेत्र की विशेषता उत्तरी, मध्य, पूर्वी और पश्चिमी इंडो-आर्यन भाषाओं की निरंतरता है, जिन्हें सामूहिक रूप से "हिंदी भाषाएँ" कहा जाता है। यह जनसांख्यिकीय और सांस्कृतिक खंड मीडिया उपभोग के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। ऐतिहासिक रूप से, हिंदी और उर्दू का मिश्रण हिंदुस्तानी, भारत के बड़े हिस्सों में व्यापक रूप से स्वीकृत भाषा के रूप में उभरा, इसकी भाषाई आत्मीयता इतनी गहरी थी कि इसे स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान भारतीय नेताओं ने राष्ट्रीय पहचान के एक शक्तिशाली प्रतीक के रूप में अपनाया। यह ऐतिहासिक संदर्भ राष्ट्र में भाषाई रूपों की गहरी सांस्कृतिक प्रतिध्वनि को रेखांकित करता है।हिंदी और अंग्रेजी लंबे समय से मुख्यधारा के मीडिया पर हावी रही हैं, डिजिटल क्रांति ने सामग्री निर्माण और उपभोग को लोकतांत्रिक बना दिया है, जिससे क्षेत्रीय और हाइपरलोकल कथाओं के लिए नए रास्ते खुल गए हैं। ओवर-द-टॉप (OTT) प्लेटफ़ॉर्म ने वैश्विक सामग्री उपभोग पैटर्न को मौलिक रूप से बदल दिया है, जिसमें भारत तेज़ी से खुद को एक महत्वपूर्ण बाज़ार के रूप में स्थापित कर रहा है। भारतीय OTT बाज़ार ने काफ़ी विस्तार किया है, जिसका मूल्य 2023 में 3.6 बिलियन अमरीकी डॉलर था, और 2024 तक 5 बिलियन अमरीकी डॉलर तक पहुँचने का अनुमान है, और 2030 तक 12.5 बिलियन अमरीकी डॉलर तक और वृद्धि होगी। यह घातीय वृद्धि मुख्य रूप से पूरे भारत में इंटरनेट की पहुँच में तेज़ी से वृद्धि के कारण हुई है, जिसमें 2024 में 825 मिलियन से ज़्यादा इंटरनेट उपयोगकर्ता होंगे, साथ ही दुनिया की कुछ सबसे किफ़ायती मोबाइल डेटा दरें भी होंगी, जो औसतन ₹10 प्रति

GB होंगी। स्मार्टफ़ोन को व्यापक रूप से अपनाए जाने से डिजिटल सामग्री तक पहुँच और भी ज़्यादा लोकतांत्रिक हो गई है। कोविड-19 महामारी ने एक महत्वपूर्ण उत्प्रेरक के रूप में काम किया, जिसने OTT को अपनाने में तेज़ी लाई, ख़ास तौर पर भारत के टियर 2 और टियर 3 शहरों में। यह उछाल देशव्यापी लॉकडाउन, पारंपरिक सिनेमा हॉलों के बंद होने और परिणामस्वरूप घर पर बिताए जाने वाले समय में वृद्धि का प्रत्यक्ष परिणाम था, जिससे उपभोक्ता ऑन-डिमांड और व्यक्तिगत मनोरंजन विकल्पों की ओर बढ़ गए।

2. हिंदी बोली सातत्य को परिभाषित करना

मानक हिंदी, मुख्य रूप से दिल्ली और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में प्रचलित खड़ीबोली बोली में निहित है, जिसे भारत में आधिकारिक भाषा का दर्जा प्राप्त है। हालाँकि, असंख्य क्षेत्रीय बोलियों के साथ इसका संबंध जटिल है और अक्सर एक सामाजिक भाषाई पदानुक्रम द्वारा इसकी विशेषता होती है। एक उल्लेखनीय अवलोकन यह है कि कई व्यक्ति जो खुद को हिंदी भाषी के रूप में पहचानते हैं, वास्तव में किसी अन्य भाषा या बोली में संवाद करते हैं जिसे वे हिंदी का एक रूप मानते हैं। यह व्यापक वर्गीकरण अक्सर ऐतिहासिक वर्गीकरणों से उत्पन्न होता है, जैसे कि ब्रिटिश साम्राज्य द्वारा भारतीय भाषाओं को वर्गीकृत करने के प्रयासों के दौरान किए गए वर्गीकरण।

भारत के भाषाई परिदृश्य में इन क्षेत्रीय बोलियों को पारंपरिक रूप से कम प्रतिष्ठित माना जाता है, जो मुख्य रूप से परिवार और दोस्तों के बीच अनौपचारिक संचार तक ही सीमित हैं। इसके विपरीत, मानक हिंदी को आम तौर पर औपचारिक, शहरी और व्यावसायिक संदर्भों के लिए पसंद किया जाता है, जो इसके साथ जुड़ी एक प्रचलित भाषाई प्रतिष्ठा को दर्शाता है। हिंदी को मानकीकृत करने के इस ऐतिहासिक और चल रहे सामाजिक दबाव ने, शायद अनजाने में, एक भाषाई पदानुक्रम स्थापित किया है, जो अक्सर क्षेत्रीय बोलियों को हाशिए पर रखता है और औपचारिक डोमेन में उनके कथित मूल्य को कम करता है। हालाँकि, OTT प्लेटफ़ॉर्म का उद्भव

और विकास इस स्थापित व्यवस्था को सक्रिय रूप से चुनौती दे रहा है। ये प्लेटफ़ॉर्म रणनीतिक रूप से इन बोलियों से जुड़े गहरे सांस्कृतिक गौरव और अधूरी मांग को भुनाने की कोशिश कर रहे हैं। यह गतिशीलता एक गंभीर स्थिति पैदा करती है: जिसे कभी भाषाई रूप से कम महत्वपूर्ण माना जाता था, उसे अब एक मूल्यवान और व्यावसायिक रूप से व्यवहार्य बाजार खंड के रूप में पहचाना जा रहा है। यह बदलाव संभावित रूप से भाषाई प्रतिष्ठा के पुनर्मूल्यांकन की ओर ले जा सकता है, जहाँ प्रामाणिकता और स्थानीय प्रतिध्वनि पारंपरिक मानकीकरण पर वरीयता प्राप्त करती है।

प्रमुख क्षेत्रीय हिंदी बोलियों का वर्गीकरण

भाषाई दृष्टि से, हिंदी इंडो-यूरोपीय भाषा परिवार की इंडो-आर्यन शाखा का हिस्सा है। इस ढांचे के भीतर, हिंदी क्षेत्र को पारंपरिक रूप से उनके ऐतिहासिक भाषाई विकास के आधार पर दो प्राथमिक समूहों में वर्गीकृत किया जाता है:

- **पूर्वी हिंदी:** इस समूह में अवधी, बघेली और छत्तीसगढ़ी जैसी प्रमुख बोलियाँ शामिल हैं। ये बोलियाँ उत्तर में नेपाली, पश्चिम में पश्चिमी हिंदी बोलियाँ, पूर्व में बिहारी बोलियाँ और दक्षिण में मराठी से घिरे क्षेत्रों में बोली जाती हैं।

- **पश्चिमी हिंदी:** इस समूह में हरियाणवी, ब्रजभाषा, बुंदेली, कन्नौजी और खड़ीबोली (जिन पर मानक हिंदी आधारित है) जैसी महत्वपूर्ण बोलियाँ शामिल हैं। पश्चिमी हिंदी उत्तर में हिमालय, दक्षिण में यमुना घाटी और पूर्व में बुंदेलखंड और मध्य प्रांतों के कुछ हिस्सों तक फैली हुई है।

इन पारंपरिक वर्गीकरणों से परे, अन्य प्रभावशाली बोलियों को अक्सर व्यापक "हिंदी" छत्र के तहत समूहीकृत किया जाता है, खासकर हिंदी बेल्ट के भीतर। इनमें बिहारी भाषाएँ (विशेष रूप

से मैथिली, भोजपुरी और मगही) और विभिन्न राजस्थानी भाषाएँ (जैसे मारवाड़ी, जयपुरी, मालवी, निमाड़ी, लंबाड़ी, हरौती, गोदवारी और बागरी) शामिल हैं।

कुछ शोध क्षेत्रीय लहजे और भाषाई प्रभावों के आधार पर मीडिया सामग्री के लिए हिंदी बोलियों को विशेष रूप से वर्गीकृत करते हैं। उदाहरणों में छत्तीसगढ़ी, बंगाली-उच्चारण वाली हिंदी, मराठी-उच्चारण वाली हिंदी, सामान्य (उत्तरी क्षेत्र) हिंदी और तेलुगु-उच्चारण वाली हिंदी शामिल हैं। हिंदी बोलियों के मीडिया-विशिष्ट वर्गीकरण का उद्भव, बंगाली-उच्चारण वाली हिंदी या मराठी-उच्चारण वाली हिंदी जैसी "उच्चारण वाली हिंदी" पर ध्यान केंद्रित करना, सामग्री निर्माताओं द्वारा एक व्यावहारिक और दर्शक-केंद्रित दृष्टिकोण को इंगित करता है।

ऐतिहासिक संदर्भ और भाषाई विशेषताएँ

हिंदी और उर्दू की भाषाई वंशावली एक जैसी है, दोनों की उत्पत्ति खड़ीबोली से हुई है, जो दिल्ली के आस-पास के इलाकों में बोली जाने वाली बोली है। समय के साथ, हिंदी संस्कृत से महत्वपूर्ण भाषाई उधार लेकर विकसित हुई, जबकि उर्दू अरबी और फ़ारसी से काफी प्रभावित होकर विकसित हुई, जिसने फ़ारसी-अरबी लिपि को अपनाया। यह साझा मूल लेकिन अलग-अलग विकास उनकी करीबी लेकिन अलग-अलग पहचान को उजागर करता है।

हिंदी में अन्य भारतीय-आर्य भाषाओं के समान मौलिक भाषाई विशेषताएँ हैं। इनमें दस स्वर (लघु और दीर्घ दोनों, ध्वन्यात्मक अनुनासिकीकरण के साथ), 33 व्यंजन, तीन काल (वर्तमान, भूत, भविष्य), तीन भाव (आदेशात्मक, सूचक, उपवाक्य) और दो पहलू (अपूर्ण और पूर्ण) शामिल हैं। वाक्यविन्यास की दृष्टि से, हिंदी एक क्रिया-अंतिम (SOV) भाषा है। भारतीय मीडिया में, विशेष रूप से 20वीं सदी के मध्य से राष्ट्रीय टेलीविजन पर देखी जाने वाली एक उल्लेखनीय समकालीन भाषाई घटना कोड-स्विचिंग है। इसमें वक्ताओं द्वारा एक ही वाक्य में हिंदी वाक्यांशों को अंग्रेजी वाक्यांशों के साथ सहजता से जोड़ना शामिल है, जो एक गतिशील और विकसित भाषाई वातावरण को दर्शाता है। यह तरलता हिंदुस्तानी के निरंतर उपयोग में भी स्पष्ट है, जो

हिंदी/संस्कृत और उर्दू/फ़ारसी दोनों से ली गई एक बोलचाल की भाषा है, जो महानगरीय शहरों में एक आम भाषा के रूप में काम करती है।

3. भारतीय ओटीटी बाजार: क्षेत्रीयकरण की ओर बदलाव

विकास चालक और बाजार की गतिशीलता

भारतीय ओटीटी बाजार एक अभूतपूर्व उछाल का अनुभव कर रहा है, जिसका अनुमान है कि इसका मूल्यांकन 2024 तक 5 बिलियन अमरीकी डॉलर और 2030 तक 12.5 बिलियन अमरीकी डॉलर तक पहुंच जाएगा। यह भारत को वैश्विक स्तर पर सबसे तेजी से बढ़ते ओटीटी बाजारों में से एक बनाता है। यह घातीय वृद्धि मुख्य रूप से भारत भर में इंटरनेट की पहुंच में तेजी से वृद्धि से प्रेरित है, 2024 में 825 मिलियन से अधिक इंटरनेट उपयोगकर्ताओं को समेटे हुए है, साथ ही दुनिया की कुछ सबसे कम मोबाइल डेटा दरें, औसतन 10 रुपये प्रति जीबी है। किफायती स्मार्टफोन की व्यापक उपलब्धता डिजिटल सामग्री तक पहुंच को और अधिक लोकतांत्रिक बनाती है। COVID-19 महामारी ने OTT को अपनाने के लिए एक महत्वपूर्ण त्वरक के रूप में काम किया। सिनेमा हॉल बंद होने और लोगों के घर पर अधिक समय बिताने के कारण, घर पर मनोरंजन की मांग में भारी उछाल आया, खासकर टियर 2 और टियर 3 शहरों में।

भारतीय ओटीटी परिदृश्य में प्रमुख खिलाड़ी

भारतीय ओटीटी बाजार में वैश्विक दिग्गजों और मजबूत स्थानीय खिलाड़ियों का जीवंत मिश्रण है। प्रमुख अंतरराष्ट्रीय प्लेटफ़ॉर्म में नेटफ्लिक्स, अमेज़ॅन प्राइम वीडियो और डिज़्नी+ हॉटस्टार शामिल हैं। प्रमुख घरेलू प्लेटफ़ॉर्म में ज़ी5, एमएक्स प्लेयर, सोनीलिव, इरोस नाउ, ऑल्ट बालाजी, जियो टीवी, वूट (अब बड़े पैमाने पर जियोसिनेमा के साथ विलय हो चुका है), शेमारूमी, यप्पटीवी, अरे, डिस्कवरी+, अहा, एयरटेल एक्सस्ट्रीम, चौपाल और स्टेज शामिल हैं।

बाजार में एकीकरण भी देखने को मिल रहा है, जिसका उदाहरण वूट की सामग्री और संचालन का जियोसिनेमा में स्थानांतरित होना है, जो बड़ी, एकीकृत स्ट्रीमिंग संस्थाओं की ओर रुझान को दर्शाता है।

क्षेत्रीय सामग्री की रणनीतिक अनिवार्यता

भारतीय दर्शक स्थानीयकृत सामग्री के लिए एक स्पष्ट प्राथमिकता प्रदर्शित करते हैं, एक प्रवृत्ति जो हाल ही में उद्योग रिपोर्टों में लगातार उजागर हुई है। एक महत्वपूर्ण अनुमान से संकेत मिलता है कि ओटीटी प्लेटफार्मों पर क्षेत्रीय भाषा की सामग्री की खपत 2025 तक हिंदी से अधिक होने की उम्मीद है, जो संभावित रूप से देखने में बिताए गए कुल समय का 50% से अधिक है। यह भारतीय मनोरंजन उद्योग में एक महत्वपूर्ण मोड़ है। यह रणनीतिक बदलाव मुख्य रूप से भारत की अपार भाषाई विविधता और इसके टियर-टू और टियर-थ्री शहरों में तेजी से बढ़ते डिजिटल एक्सेस द्वारा संचालित है, जो एक विशाल, अप्रयुक्त दर्शक आधार का प्रतिनिधित्व करते हैं। ओटीटी प्लेटफॉर्म अपने क्षेत्रीय सामग्री पुस्तकालयों का आक्रामक रूप से विस्तार कर रहे हैं। इसे अब एक सहायक पेशकश के रूप में नहीं देखा जाता है, बल्कि "विकास और जुड़ाव की अग्रिम पंक्ति" के रूप में देखा जाता है, जो हिंदी-प्रथम दृष्टिकोण से सामग्री रणनीति को मौलिक रूप से नया रूप देता है। क्षेत्रीय सामग्री दर्शकों के साथ एक गहरे भावनात्मक संबंध को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, क्योंकि यह उनके सांस्कृतिक, भाषाई और सामाजिक अनुभवों को प्रामाणिक रूप से दर्शाती है।

तालिका 1: प्रमुख भारतीय ओटीटी प्लेटफॉर्म और उनकी क्षेत्रीय भाषा सामग्री

यह तालिका इस बात का संक्षिप्त अवलोकन प्रदान करती है कि प्रमुख भारतीय ओटीटी प्लेटफॉर्म क्षेत्रीय भाषाओं और विशिष्ट हिंदी बोलियों के साथ कैसे जुड़ रहे हैं, जो भारतीय बाजार में क्षेत्रीयकरण की रणनीतिक अनिवार्यता को दर्शाता है।

 ISSN-2583-2581

प्लेटफार्म	**प्रस्तावित प्राथमिक भाषाएँ**	**अन्य प्रमुख क्षेत्रीय भाषाएँ**	**प्रस्तुत विशिष्ट हिंदी बोलियाँ (मूल/डब/उपशीर्षक)**	**बोलियों के प्रकार**
डिज़्नी+हॉटस्टार	हिंदी, अंग्रेजी	तमिल, तेलुगु, मलयालम	मुख्यतः हिंदी मूल (बोली का प्रभाव हो सकता है), कोई स्पष्ट बोली मूल सूचीबद्ध नहीं है।	मूल श्रृंखला (हिंदी), लाइसेंस प्राप्त सामग्री, डब सामग्री
जी5	हिंदी, अंग्रेजी	बंगाली, मलयालम, तमिल, तेलुगु, उर्दू, कन्नड़, मराठी, उड़िया	भोजपुरी (फ़िल्में, कुछ मूल), अन्य हिंदी बोलियाँ (अति-स्थानीय कहानी कहने में निहित)	मूल श्रृंखला, मूल फ़िल्में, लाइसेंस प्राप्त सामग्री, डब सामग्री, उपशीर्षक सामग्री
एमएक्स प्लेयर	हिंदी, अंग्रेजी	तमिल, तेलुगु, उर्दू, कन्नड़, मलयालम, बांग्ला, मराठी, भोजपुरी, उड़िया, पंजाबी, गुजराती	भोजपुरी (मूल श्रृंखला, लाइसेंस प्राप्त सामग्री), अन्य हिंदी बोलियाँ	मूल श्रृंखला, मूल फ़िल्में, लाइसेंस प्राप्त सामग्री, डब सामग्री, उपशीर्षक सामग्री

 ISSN-2583-2581

सोनीलिव	हिंदी, अंग्रेजी	बंगाली, तमिल, तेलुगु, मलयालम, कन्नड़, मराठी, पंजाबी	मगही (एक मूल में व्यापक पहुंच के लिए जानबूझकर टाला गया), कोई स्पष्ट बोली मूल सूचीबद्ध नहीं है।	मूल श्रृंखला (हिंदी), लाइसेंस प्राप्त सामग्री, डब सामग्री, उपशीर्षक सामग्री
अमेज़न प्राइम वीडियो	हिंदी, अंग्रेजी	तेलुगु, तमिल, कन्नड़, मलयालम, बंगाली, मराठी, पंजाबी	कोई स्पष्ट बोली मूल सूचीबद्ध नहीं है। "हिंदी" सामग्री के लिए वैयक्तिकरण	मूल श्रृंखला (हिंदी), लाइसेंस प्राप्त सामग्री, डब सामग्री, उपशीर्षक सामग्री
नेटफ्लिक्स	हिंदी, अंग्रेजी	तमिल, तेलुगु, पंजाबी	कोई स्पष्ट बोली मूल सूचीबद्ध नहीं है। कई भारतीय भाषाओं में डबिंग की गई है।	मूल श्रृंखला (हिंदी), लाइसेंस प्राप्त सामग्री, डब सामग्री, उपशीर्षक सामग्री
स्टेज	हरियाणवी, राजस्थानी	(अवधी, मैथिली, मगही, बुंदेली, छत्तीसगढ़ी आदि	हरियाणवी (मूल), राजस्थानी (मूल)	मूल श्रृंखला, मूल फ़िल्में, लघु फ़िल्में, स्टैंड-अप

 ISSN-2583-2581

		में विस्तार की योजना)		कॉमेडी, कविता, लोक कला
चौपाल	पंजाबी, हरियाणवी	भोजपुरी	भोजपुरी (मूल), हरियाणवी (मूल)	मूल श्रृंखला, मूल फ़िल्में, लघु फ़िल्में
ऑल्ट बालाजी	हिंदी	गुजराती, मराठी, पंजाबी	मुख्यतः हिंदी मूल (बोली का प्रभाव हो सकता है)	मूल श्रृंखला, मूल फ़िल्में, लाइसेंस प्राप्त सामग्री
शेमारूमी	हिंदी, अंग्रेजी	गुजराती, मराठी, पंजाबी	मुख्यतः हिंदी सामग्री, कुछ क्षेत्रीय सामग्री।	मूल फ़िल्में, लाइसेंस प्राप्त सामग्री
यप्पटीवी	अंग्रेज़ी	मराठी, मलयालम, आदि	हिन्दी बोलियों के लिए स्पष्ट रूप से निर्दिष्ट नहीं किया गया है।	लाइव टीवी चैनल, क्षेत्रीय शो, मूल कार्यक्रम

नोट: यह तालिका उपलब्ध कराई गई शोध सामग्री पर आधारित है और हो सकता है कि इसमें समस्त सामग्री सम्मिलित न हो।

4. क्षेत्रीय हिंदी बोलियों का एकीकरण: विषय-वस्तु के रुझान और मंच

समर्पित बोली मंच: स्टेज और चौपाल का केस स्टडी

क्षेत्रीय सामग्री परिदृश्य में समर्पित प्लेटफॉर्म महत्वपूर्ण खिलाड़ी के रूप में उभर रहे हैं, विशेष रूप से हिंदी बोलियों को लक्षित कर रहे हैं।

स्टेज: यह प्लेटफॉर्म रणनीतिक रूप से भारत की अग्रणी ओटीटी सेवा के रूप में तैनात है जो विशेष रूप से क्षेत्रीय बोलियों को समर्पित है। 2019 में स्थापित, स्टेज ने शुरुआत में हरियाणवी और राजस्थानी बोलियों पर ध्यान केंद्रित किया, जिसमें मूल वेब श्रृंखला, फिल्में, लघु फिल्में, स्टैंड-अप कॉमेडी, कविता और लोक कला प्रदर्शनों सहित 400 घंटे से अधिक विविध सामग्री एकत्र की गई। स्टेज पर उल्लेखनीय हरियाणवी मूल श्रृंखला में ग्रुप-डी, कॉलेज कांड, अखाड़ा, ओपरी पराई, मेवात, देहलीज़ और घर की बात शामिल हैं। ये शीर्षक हाइपर-लोकल कथाओं के लिए मंच की प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं। स्टेज की महत्वाकांक्षी विस्तार योजनाएं हैं, जिसका लक्ष्य अवधी, मैथिली और मगही भाषाओं में सामग्री की पेशकश करना है, विशेष रूप से पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार में पर्याप्त दर्शकों को लक्षित करना, यह प्लैटफ़ॉर्म स्थानीय प्रतिभाओं को सक्रिय रूप से बढ़ावा देता है, 2,000 से ज़्यादा स्थानीय कलाकारों और रचनाकारों को रोजगार देता है, जिसका घोषित मिशन "भारत के लिए सच्चा नेटफ्लिक्स" विकसित करना है, जिसमें सामान्य भाषाओं की तुलना में बोलियों में कंटेंट को प्राथमिकता दी जाती है।

चौपाल: अगस्त 2021 में लॉन्च हुआ चौपाल क्षेत्रीय कंटेंट पर ध्यान केंद्रित करने वाला एक और महत्वपूर्ण खिलाड़ी है, जो पंजाबी, हरियाणवी और भोजपुरी भाषाओं में मनोरंजन प्रदान करता है। इसकी कंटेंट लाइब्रेरी में फ़िल्में, वेब सीरीज़ और शॉर्ट फ़िल्में शामिल हैं, जिसमें 12 ओरिजिनल टाइटल लॉन्च किए गए हैं। चौपाल पर प्रमुख भोजपुरी ओरिजिनल वेब सीरीज़ में प्रपंच, लंका में डंका और पकड़ुआ बियाह शामिल हैं। ये टाइटल एक विशिष्ट हिंदी बोली के साथ प्लेटफ़ॉर्म के सीधे जुड़ाव को उजागर करते हैं। चौपाल ने रणनीतिक साझेदारी के माध्यम से अपनी पहुँच का विस्तार भी किया है, जिससे इसकी सामग्री अमेज़न प्राइम

वीडियो चैनल और ज़ी5 ग्लोबल (अमेरिकी प्रवासियों के लिए) के साथ-साथ एयरटेल एक्सस्ट्रीम प्ले, टाटा बिंज प्ले और जियो टीवी जैसे अन्य प्लेटफ़ॉर्म पर उपलब्ध हो गई है। स्टेज और चौपाल जैसे प्लेटफ़ॉर्म की प्रदर्शित सफलता और आक्रामक विस्तार रणनीतियाँ इस बात का पुख्ता सबूत देती हैं कि विशिष्ट, अक्सर ऐतिहासिक रूप से अनदेखी की गई, क्षेत्रीय हिंदी बोलियों पर ध्यान केंद्रित करना केवल एक सांस्कृतिक प्रयास नहीं है, बल्कि एक मजबूत और लाभदायक व्यवसाय मॉडल है।

मुख्यधारा के प्लेटफॉर्म का दृष्टिकोण: क्षेत्रीय हिंदी बोलियों में सामग्री का विश्लेषण या हिंदी सामग्री पर उनका प्रभाव

जबकि समर्पित प्लेटफॉर्म बोलियों में विशेषज्ञता रखते हैं, मुख्यधारा की ओटीटी सेवाएँ क्षेत्रीय सामग्री के लिए व्यापक दृष्टिकोण अपनाती हैं।

एमएक्स प्लेयर: भोजपुरी सहित क्षेत्रीय भाषा की सामग्री की एक विस्तृत श्रृंखला की पेशकश करते हुए, एमएक्स प्लेयर हिंदी, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम, पंजाबी, बंगाली, गुजराती और मराठी में भी व्यापक रूप से सामग्री पेश करता है। इसकी रणनीति गहरी बोली विशेषज्ञता के बजाय व्यापक क्षेत्रीय कवरेज प्रतीत होती है।

ZEE5: यह प्लेटफ़ॉर्म अपनी सामग्री रणनीति के मुख्य घटक के रूप में क्षेत्रीय और हाइपरलोकल कहानी कहने पर जोर देता है। यह हिंदी, बंगाली, मलयालम, तमिल, तेलुगु, उर्दू, कन्नड़, मराठी, भोजपुरी और ओडिया में सामग्री प्रदान करता है। विशेष रूप से, इसकी कुल सामग्री खपत का 50% गैर-हिंदी भाषाओं से आता है, और इसमें भोजपुरी फिल्मों का पर्याप्त संग्रह है।

SonyLIV:जबकि इसकी मुख्य लाइब्रेरी में हिंदी और अंग्रेजी में 40,000 घंटे से अधिक टीवी शो शामिल हैं, और यह बंगाली, तमिल, तेलुगु, मलयालम, कन्नड़, मराठी और पंजाबी में सामग्री प्रदान करता है, विशिष्ट हिंदी बोलियाँ आमतौर पर इसकी मूल श्रृंखला के लिए स्पष्ट रूप से

सूचीबद्ध नहीं हैं। एक उल्लेखनीय उदाहरण शो जहानाबाद - ऑफ लव एंड वॉर है, जहां रचनाकारों ने व्यापक दर्शकों तक पहुंच सुनिश्चित करने के लिए जानबूझकर स्थानीय मगही बोली का उपयोग करने से बचने का विकल्प चुना।

अमेज़न प्राइम वीडियो: हिंदी मूल सामग्री की एक विस्तृत सूची प्रदान करता है और उपयोगकर्ताओं को हिंदी और अन्य प्रमुख भारतीय भाषाओं सहित 41 विकल्पों में से पाँच पसंदीदा ऑडियो और उपशीर्षक स्ट्रीमिंग भाषाओं का चयन करके अपने होमपेज की सिफारिशों को निजीकृत करने की सुविधा प्रदान करता है। हालाँकि, इसकी मूल सामग्री स्लेट में विशिष्ट हिंदी बोलियों में प्रस्तुतियाँ स्पष्ट रूप से शामिल नहीं हैं।

नेटफ्लिक्स: हालाँकि नेटफ्लिक्स के पास हिंदी मूल सामग्री की एक महत्वपूर्ण संख्या है और इसने तमिल और तेलुगु में मूल सामग्री का निर्माण करते हुए कई भारतीय भाषाओं में प्रमुख शीर्षकों को डब करना शुरू कर दिया है, लेकिन भोजपुरी, अवधी, हरियाणवी, बुंदेली या ब्रजभाषा जैसी विशिष्ट हिंदी बोलियों में मूल सामग्री के निर्माण का कोई स्पष्ट संकेत नहीं है।

मुख्यधारा के OTT प्लेटफ़ॉर्म पर "हिंदी" श्रेणी अक्सर सामग्री के लिए एक व्यापक छत्र शब्द के रूप में कार्य करती है। हालाँकि इसमें सूक्ष्म बोली प्रभावों वाली सामग्री शामिल हो सकती है या विभिन्न हिंदी बोलियों के बोलने वालों द्वारा आम तौर पर समझी जा सकने वाली हो सकती है, लेकिन ये प्लेटफ़ॉर्म शायद ही कभी विशिष्ट, अलग हिंदी बोलियों में स्पष्ट रूप से और पूरी तरह से मूल सामग्री का उत्पादन करते हैं। यह दृष्टिकोण समर्पित आला खिलाड़ियों के विपरीत है। यह अवलोकन कि प्रमुख वैश्विक और राष्ट्रीय OTT अपने मूल के लिए मुख्य रूप से "हिंदी" सूचीबद्ध करते हैं, जबकि समर्पित प्लेटफ़ॉर्म स्पष्ट रूप से विशिष्ट बोलियों में उत्पादन करते हैं, यह सुझाव देता है कि मुख्यधारा के प्लेटफ़ॉर्म संभवतः "मानक हिंदी" दर्शकों, या एक सामान्यीकृत हिंदी को लक्षित कर रहे हैं जो अलग-अलग बोलियों द्वारा विभाजित करने के बजाय पूरे हिंदी क्षेत्र में सुलभ है। उनकी "क्षेत्रीय सामग्री" रणनीति मुख्य रूप से हिंदी की बोलियों के बजाय प्रमुख भाषाओं (जैसे, तमिल, तेलुगु) पर केंद्रित है। यह

सबसे बड़े भाषाई समूह के भीतर पहुंच को अधिकतम करने के लिए एक रणनीतिक निर्णय को इंगित करता है, भले ही इसका मतलब विशिष्ट बोली समुदायों के साथ गहरे, अधिक प्रामाणिक जुड़ाव का त्याग करना हो। यह दृष्टिकोण एक महत्वपूर्ण बाजार अंतर छोड़ता है जिसका समर्पित बोली मंच सफलतापूर्वक दोहन कर रहे हैं, जो बड़े खिलाड़ियों के लिए अधिक बारीक दर्शकों की वफादारी हासिल करने के संभावित छूटे हुए अवसर को उजागर करता है।

तालिका 2: ओटीटी प्लेटफॉर्म पर क्षेत्रीय हिंदी बोलियों में चुनिंदा मूल सामग्री के उदाहरण

यह तालिका विशेष रूप से क्षेत्रीय हिंदी बोलियों में निर्मित मूल श्रृंखलाओं और फिल्मों के ठोस उदाहरण प्रदान करती है, जो मुख्य रूप से समर्पित बोली-केंद्रित प्लेटफार्मों की पेशकश को प्रदर्शित करती है।

बोली	प्लेटफ़ॉर्म	सामग्री शीर्षक (श्रृंखला/फ़िल्म)	शैली	मुख्य कलाकार (यदि उल्लेखनीय हो)	संक्षिप्त विवरण
भोजपुरी	चौपाल	*प्रपंच*	एक्शन क्राइम	पवन सिंह	यह कहानी प्रेम और मित्रता के बारे में है
भोजपुरी	चौपाल	*लंका में डंका*	एक्शनड्रामा	रितेश पांडे	यह दो दोस्तों की कहानी है, जिनमें से एक को नायक गुंडों से बचाता है।

 ISSN-2583-2581

भोजपुरी	चौपाल	*पकदुआ ब्याह*	क्राइम, सोशल ड्रामा	अंकुश राजा	एक पारिवारिक कलह और एक चौंकाने वाली घटना से जुड़ी कहानी।
भोजपुरी	मिनीपिक्स	*ब्लूटूथ बॉय्ज*	ड्रामा		अपनी बहन की बातों से प्रभावित होकर आत्महत्या पर विचार करने वाले एक लड़के की कहानी।
भोजपुरी	मिनीपिक्स	*नीला ड्रम*	थ्रिलर		एक सच्ची घटना से प्रेरित
हरीयाणवी	स्टेज	*कॉलेज कांड*	टीवी सीरीज	गिरिश कात्याल, योगेश भारद्वाज	कॉलेज परिवेश में घटित घटनाओं को दर्शाती एक श्रृंखला।
हरीयाणवी	स्टेज	*ग्रुप-डी*	टीवी सीरीज	अशोक कुमार, सिंह तेजी	महेश के अधिकारी बनने के सपने को दर्शाती
हरीयाणवी	स्टेज	*अखाड़ा*	टीवी सीरीज	मेघा शर्मा, गीतू परी	एक युवा पहलवान भाई-भतीजावाद के कारण अपराध की

 ISSN-2583-2581

					दुनिया में चला जाता है।
हरीयाणवी	स्टेज	*घर की बात*	कॉमेडी ड्रामा	हितेश दुआ, मोहित नैन	उतार-चढ़ाव से भरपूर एक मध्यमवर्गीय पारिवारिक नाटक, जो एक युवा जोड़े और उनसे मिलने आए माता-पिता पर केंद्रित है।
हरीयाणवी	स्टेज	*मेवात*	टीवी सीरीज	सिका कुरैशी, सोयब इकबाल	हरियाणा के मेवात शहर पर आधारित, स्थानीय जीवन पर आधारित।
छत्तीसगढ़ी	(विभिन्न, स्थानीय प्रस्तुतियों सहित)	मोर छैंहा भुइंया 2	ड्रामा		भिन्न विचारधारा वाले दो भाईयो की कहानी
छत्तीसगढ़ी	(विभिन्न, स्थानीय प्रस्तुतियों सहित)	ले शुरू होगे माया के कहानी	ड्रामा		इस क्षेत्र में स्थापित एक प्रेम कहानी।

छत्तीसगढ़ी	(विभिन्न, स्थानीय प्रस्तुतियों सहित)	भूलन द मेज़	ड्रामा		छत्तीसगढ़ के एक आदिवासी गांव की कहानी, जिसमें भूमि विवाद और हत्या शामिल है।
बुंदेली	(विभिन्न, स्थानीय प्रस्तुतियों सहित)	गुथली लड्डू	फीचर फिल्म		अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में मान्यता पाने वाली पहली बुन्देली भाषा की फिल्म।

नोट: यह तालिका उपलब्ध कराई गई शोध सामग्री में विशिष्ट क्षेत्रीय हिंदी बोलियों में मौजूद मूल विषय-वस्तु पर प्रकाश डालती है।

5. स्थानीयकरण रणनीतियाँ और तकनीकी सुविधाकर्ता

भाषाई अंतर को पाटने में डबिंग और उपशीर्षक की भूमिका

डबिंग, जिसमें मूल ऑडियो को अनुवादित ऑडियो ट्रैक से बदलना शामिल है, और उपशीर्षक, जिसमें मूल ऑडियो चलने के दौरान स्क्रीन पर अनुवादित पाठ प्रदर्शित होता है, ये दो प्राथमिक रणनीतियाँ हैं जो OTT प्लेटफ़ॉर्म द्वारा भाषाई बाधाओं के पार सामग्री वितरित करने के लिए नियोजित की जाती हैं। भारतीय संदर्भ में, उपशीर्षक का उपयोग आमतौर पर इसकी कम लागत और दर्शकों के लिए मूल ऑडियो और अभिनेताओं के स्वरों को बनाए रखने की क्षमता के कारण अधिक किया जाता है। हालाँकि, डबिंग को अक्सर बच्चों के लिए

लक्षित सामग्री के लिए पसंद किया जाता है, जहाँ उपशीर्षक पढ़ना व्यावहारिक नहीं हो सकता है। ये स्थानीयकरण सेवाएँ न केवल वैश्विक दर्शकों तक सामग्री की पहुँच बढ़ाने के लिए बल्कि भारत के भीतर आंतरिक भाषा अवरोधों को तोड़ने के लिए भी महत्वपूर्ण हैं। भारतीय सामग्री को वैश्विक अपील प्राप्त करने के लिए, इसे पहले भारत के भीतर विविध क्षेत्रीय दर्शकों के लिए सुलभ बनाया जाना चाहिए।

क्षेत्रीय हिंदी बोलियों के लिए सामग्री का प्रभावी स्थानीयकरण केवल भाषाई अनुवाद से कहीं आगे तक फैला हुआ है; इसके लिए सांस्कृतिक अनुकूलन के गहन स्तर की आवश्यकता होती है। इस जटिल प्रक्रिया में मुहावरेदार अभिव्यक्तियों, चुटकुलों और सूक्ष्म सांस्कृतिक संदर्भों को सावधानीपूर्वक संशोधित करना शामिल है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि वे दर्शकों के विशिष्ट रीति-रिवाजों, मूल्यों और हास्य के साथ सहज रूप से संरेखित हों, जिससे अनुवादित सामग्री की प्रासंगिकता और प्रतिध्वनि बढ़े। इस सांस्कृतिक संवेदनशीलता से रहित शाब्दिक अनुवाद, मूल सामग्री के प्रभाव, हास्य या भावनात्मक गहराई को खोने का जोखिम उठाता है।

भाषा और उपशीर्षक चयन के लिए प्लेटफ़ॉर्म सुविधाएँ

नेटफ्लिक्स, अमेज़न प्राइम वीडियो, ZEE5, SonyLIVऔर MX प्लेयर सहित प्रमुख OTT प्लेटफ़ॉर्म उपयोगकर्ताओं को उनके देखने के अनुभव को अनुकूलित करने के लिए सहज नियंत्रण प्रदान करते हैं। ये सुविधाएँ उपयोगकर्ताओं को सीधे प्लेयर इंटरफ़ेस के भीतर ऑडियो भाषा और उपशीर्षक वरीयताओं को आसानी से बदलने की अनुमति देती हैं। इन-प्लेयर नियंत्रणों से परे, Amazon Prime Video जैसे प्लेटफ़ॉर्म उपयोगकर्ताओं को अपनी पसंदीदा स्ट्रीमिंग भाषाओं का चयन करके अपने होमपेज अनुशंसाओं को वैयक्तिकृत करने में सक्षम बनाते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि सामग्री खोज उनकी भाषाई प्राथमिकताओं के अनुरूप हो।

इससे एक फीडबैक लूप बनता है, जहाँ बोली संबंधी सामग्री के लिए उपयोगकर्ता की मांग बढ़ेगी क्योंकि सुविधाएँ अधिक प्रचलित और परिष्कृत होंगी। यह बढ़ती मांग प्लेटफ़ॉर्म पर

अपने स्थानीयकरण ऑफ़र को लगातार विस्तारित और परिष्कृत करने के लिए सीधा दबाव बनाती है, जिससे उन्हें भाषाई विविधता के लिए अधिक विस्तृत और समावेशी दृष्टिकोण की ओर धकेला जाता है। यह बोली संबंधी समर्थन के महत्व को एक मात्र तकनीकी विशेषता से एक महत्वपूर्ण प्रतिस्पर्धी विभेदक तक बढ़ा देता है, क्योंकि जो प्लेटफ़ॉर्म इन उभरती अपेक्षाओं को पूरा करने में विफल होते हैं, वे दर्शकों की वफादारी खोने का जोखिम उठाते हैं।

स्थानीयकरण में सांस्कृतिक और भाषाई बारीकियों को बनाए रखने में चुनौतियाँ

क्षेत्रीय हिंदी बोलियों के लिए सामग्री स्थानीयकरण में एक महत्वपूर्ण बाधा भाषाई सटीकता और गहरी सांस्कृतिक संवेदनशीलता दोनों को सुनिश्चित करना है। यह उन कथाओं के लिए विशेष रूप से चुनौतीपूर्ण है जो जटिल सांस्कृतिक बारीकियों, हास्य या विशिष्ट सामाजिक संदर्भों में तल्लीन हैं। क्षेत्रीय सामग्री में "सांस्कृतिक प्रामाणिकता" की अनिवार्यता सर्वोपरि है, क्योंकि दर्शक ऐसी कहानियाँ चाहते हैं जो वास्तव में उनके "वास्तविक जीवन के अनुभव, संस्कृति और भावनाओं" को दर्शाती हों। यह मूल की भावना को पकड़ने के लिए शाब्दिक अनुवाद से परे है। जबकि AI उपकरण मापनीयता प्रदान करते हैं, बोली संचार की बारीकियों को अक्सर मानव विशेषज्ञों के विवेकपूर्ण निर्णय की आवश्यकता होती है। इसलिए, विशेषज्ञ भाषाविद् और सांस्कृतिक विशेषज्ञ अपरिहार्य हैं, जो स्थानीयकृत सामग्री में उच्चतम गुणवत्ता और सांस्कृतिक निष्ठा सुनिश्चित करने के लिए AI तकनीकों के साथ मिलकर काम करते हैं।

क्षेत्रीय सामग्री में सांस्कृतिक प्रामाणिकता की बढ़ती मांग का मतलब है कि स्थानीयकरण को पूरी तरह से तकनीकी प्रक्रिया के रूप में नहीं माना जा सकता है। इसके लिए विशिष्ट बोली के सांस्कृतिक संदर्भ की गहन समझ की आवश्यकता होती है, जिसमें उसका अनूठा हास्य, सामाजिक अभिव्यक्तियाँ और अव्यक्त मानदंड शामिल हैं। यह AI के लिए एक कठिन चुनौती प्रस्तुत करता है, जो अपनी प्रगति के बावजूद, बोली संचार में निहित सूक्ष्म, अलिखित नियमों

और भावनात्मक विभक्तियों की सटीक व्याख्या और पुनरुत्पादन करने के लिए संघर्ष कर सकता है। उदाहरण के लिए, यदि AI अकेले अनुवाद को संभालता है, तो स्थानीयकृत वाक्यांश व्याकरणिक रूप से सही हो सकता है, लेकिन सांस्कृतिक रूप से अनुपयुक्त या इच्छित भावनात्मक भार से रहित हो सकता है।

6. निष्कर्ष

भारतीय ओटीटी प्लेटफॉर्म का परिदृश्य एक गहन परिवर्तन से गुजर रहा है, जो क्षेत्रीय हिंदी भाषाओं और बोलियों की बढ़ती मांग से काफी प्रेरित है। यह बदलाव केवल कंटेंट पेशकशों के विस्तार से आगे बढ़ता है; यह कंटेंट रणनीति के एक मौलिक पुनर्मूल्यांकन का प्रतिनिधित्व करता है, जो दर्शकों के अपने मूल भाषाई रूपों में प्रस्तुत किए गए कथानकों के साथ गहरे सांस्कृतिक और भावनात्मक जुड़ाव को पहचानता है। स्टेज और चौपाल जैसे समर्पित प्लेटफॉर्म ने पारंपरिक मीडिया के केंद्रीकृत, मानकीकृत दृष्टिकोण को चुनौती देते हुए एक मजबूत व्यवसाय मॉडल के रूप में विशिष्ट बोली सामग्री की व्यवहार्यता का प्रदर्शन किया है। जबकि मुख्यधारा के प्लेटफॉर्म बड़े पैमाने पर एक व्यापक "हिंदी" छत्र के तहत काम करते हैं, हाइपर-स्थानीयकृत सामग्री की बढ़ती मांग अधिक विस्तृत भाषाई जुड़ाव के लिए बढ़ते बाजार अवसर का सुझाव देती है।

क्षेत्रीय हिंदी बोलियों का एकीकरण स्थानीयकरण रणनीतियों के विकास द्वारा सुगम बनाया गया है, जिसमें डबिंग और उपशीर्षक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। AI-संचालित समाधानों के उद्भव ने लागत और समय की बाधाओं को कम करके इन बोलियों के लिए सामग्री निर्माण और वितरण को लोकतांत्रिक बनाने का वादा किया है, जिससे पहले अकल्पनीय पैमाने पर स्थानीयकरण संभव हो पाया है। हालाँकि, सच्ची सांस्कृतिक प्रामाणिकता की खोज के लिए

बोली संचार में निहित सूक्ष्म बारीकियों, हास्य और भावनात्मक विभक्तियों को पकड़ने के लिए निरंतर मानवीय विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि सामग्री वास्तव में अपने दर्शकों के साथ प्रतिध्वनित हो। इस क्षेत्रीयकरण का प्रभाव बहुआयामी है, जिससे दर्शकों की भागीदारी बढ़ी है, भाषाई विरासत का संरक्षण हुआ है, सामग्री निर्माण का लोकतंत्रीकरण हुआ है और महत्वपूर्ण रोजगार सृजन हुआ है। बोलियों की यह बढ़ती प्रमुखता उनकी "सॉफ्ट पावर" में योगदान करती है, गर्व को बढ़ावा देती है और निरंतर उपयोग को प्रोत्साहित करती है। भारतीय ओटीटी का भविष्य देश की समृद्ध भाषाई विविधता को अपनाने और उसका जश्न मनाने की इसकी क्षमता से जुड़ा हुआ है। चूंकि प्लेटफॉर्म इन अवसरों और चुनौतियों का सामना करना जारी रखते हैं, इसलिए क्षेत्रीय हिंदी भाषाओं और बोलियों में रणनीतिक निवेश न केवल मनोरंजन उद्योग को आकार देगा, बल्कि डिजिटल युग में भारत की अनूठी सांस्कृतिक विविधता को संरक्षित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

- Chacko, B. (2024, May 21). What role does regional content play for OTT platforms? *Afaqs!*https://www.afaqs.com/news/ott-streaming/what-role-does-regional-content-play-for-ott-platforms
- Dhiman, D. B. (2023, April 5). *Diversity of Indian regional content on OTT platforms: a critical review*. https://papers.ssrn.com/sol3/papers.cfm?abstract_id=4417599
- https://www.cnbctv18.com/business/move-over-netflix-prime-video-hotstar-regional-ott-platforms-are-new-favourites-among-indian-consumers-16095301.htm
- *Sri Bahubali » How regional language content is impacting OTT*. (n.d.). https://sribahubali.com/news/how-regional-language-content-is-impacting-ott/https://www.impactonnet.com/cover-story/big-returns-on-regional-ott-7964.html

- Guest. (2022, June 12). How regional language content is impacting OTT. *FinancialExpress*. https://www.financialexpress.com/business/brandwagon-how-regional-language-content-is-impacting-ott-2557586/https://www.seamedu.com/blog/the-future-of-regional-otts-in-digital-era-in-india

- Karmakar, S. (2024, September 3). The rise of regional streaming platforms: Catering to the diversity of India. *Financial Express*. https://www.financialexpress.com/business/brandwagon/the-rise-of-regional-streaming-platforms-catering-to-the-diversity-of-indianbspnbspnbsp/3600348/https://www.thehansindia.com/ott-web-series/revolutionizing-ott-platforms-the-rise-of-regional-content-940142

- https://dizhiguojia.com/wp-content/uploads/2023/11/8-DDJ-OCTOBER-2023-1.pdf A Diversity Assessment of Indian Regional Content on OTT Platforms – A Theoretical Study Ms.Sridevi M1 , Dr. T. Sarathy2 &Dr.Deepa V

- https://www.storyboard18.com/how-it-works/regional-ott-content-volumes-exceeded-hindi-language-content-in-2023-ficci-ey-report-25550.htm

- The rise of Hindi OTT platforms: Transforming India's entertainment landscapehttps://veterinaria.org/index.php/REDVET/article/view/1509

- The Rise of Hindi OTT Platforms: Transforming India's Entertainment Landscape GeetamShrivastava1 ,Dr.A.Ram Pandey2
- Indian Media in the Age of OTT: Navigating Challenges and Regulatory Necessities Ashish Kumar, Ph.D. Research Scholar, Department of Journalism and Mass Communication, School of Media and Communication, Manipal University Jaipur